Impact Factor : 3.963 (IIJF)

Registration No. 1803/2008 ISSN :- 2319-6297

The Original Source

Journal for All Research

An Interdisciplinary Quarterly Research Peer Reviewed Journal

Editor in Chief
Prof. (Dr.) Ashok Kumar Singh

Editor
Dr. Rajeev Kumar Srivastav
Dr. B.K. Srivastav

Founder
Late Prof. S.N. Sinha
Eminent Historian & Former HOD
Dept. of History
Jammia Millia Islamia, New Delhi

Volume 4 No. -17 (July-Sept. 2017)

Published by
Centre for Historical and Cultural Studies & Research
Varanasi (U.P.) India

Scanned with CamScanner

Content.....

1.	आधुनिक कला बाजार एवं कलाकार का सम्बन्ध *दीपक कुमार विश्वकर्मा*	.....	1-3
2.	उत्तर भारतीय संगीत में रागांग पद्धति *प्रियंका*	.....	4-7
3.	पर्यावरण प्रदूषण तका मानव स्वास्थ्य (प्रदूषित जल के विशेष सन्दर्भ में) *डॉ0 विद्या राय*	.....	8-11
4.	STATUS ISSUES AND CHALLENGES OF MANILA HILL STATION OF UTTARAKHAND *Dr. Anurag Srivastava* *Dr. Mohan Lal*	.....	12-16
5.	FINANCIAL INCLUSION- A TOOL FOR RURAL DEVELOPMENT IN INDIA *Ajit Yadav*	.....	17-23
6.	स्वतंत्र्योत्तर उत्तराखंड में राजनीतिक गतिविधियां एक अध्ययन *दीपक कुमार विश्वकर्मा*	.....	24-34
7.	श्री अरविन्द के मत में वेद की व्याख्या का अध्यात्मपरक आधार *विनय शंकर*	.....	35-37
8.	जड़ सृष्टि की उत्पत्ति *डॉ0 ज्योत्सना त्रिपाठी*	.....	38-40
9.	मानवाधिकार उद्विकास एवं वर्तमान स्थिति : एक विवेचन *डॉ0 महेन्द्र प्रताप सिंह*	.....	41-46
10.	भारत में दलितोत्थान की संवैधानिक व्यवस्था की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन *जयवन्त राजपूत* *प्रो0 शन्तन सिंह नेगी*	.....	47-56
11.	स्वतंत्रता पूर्व बिहार के जनजाति आंदोलन *डॉ0 विकास रंजन कुमार*	.....	57-61
12.	कविचूडामणिचक्रवर्तिकृतवेदस्तुतिटीकाया: वैशिष्ट्यम् *श्रीकुलदीपतिवारी*	.....	62-67
13.	साहित्य और समाज पर मुक्तिबोध का दृष्टिकोण *डॉ0 रमेश कुमार गोहे*	.....	68-74
14.	प्राचीन भारत में नौ परिवहन *पूर्णिमा सिंह*	.....	75-77
15.	न्यायवैशेषिकदर्शनप्रशिक्षणे आधुनिकशिक्षापद्धतेः अनुप्रयोगः *डॉ. मुनीशकुमारमिश्रः*	.....	78-88
16.	INDIAN WISDOM ON OCULAR PERCEPTION AND COGNITION *Satyam Dwivedi* *Dr. Munish Kumar Mishra*	.....	89-94

****

Scanned with CamScanner

Impact Factor : 3.963 (IIJF)

ISSN :- 2319-6297

साहित्य और समाज पर मुक्तिबोध का दृष्टिकोण

डॉ0 रमेश कुमार गोहे*

साहित्य और समाज का आपस मे गहरा अंतर्संबंध है | समाज में जो घटित होता है साहित्य में उसका प्रतिबिम्ब दिखाई देता है | साहित्य और समाज को एक दुसरे से अलग करके बिलकुल भी नहीं देखा जा सकता और न ही रखा जा सकता है | आधुनिक काल की यह महत्वपूर्ण उपलब्धि रही है कि उसने साहित्य की प्रवृत्तियों को कल्पना जनित मनोरंजन से हटाकर वास्तविकता के धरातल पर लाकर खड़ा कर दिया | कुछ प्रगतिशील साहित्यकार इस आधुनिक भाव बोध को स्वीकार भी कर लेते हैं परन्तु कुछ को साहित्य का वही पुराना डांचा बांधे रखता है | ऐसे में *"साहित्य समाज का दर्पण है|"* जैसी परिभाषा अपने अर्थ को खोती हुई साहित्यिक तमासा देखने पर मज़बूर ही रही | सिर्फ भावना के आधार पर साहित्य सृजन तब तक उपयुक्त नहीं होता जब तक उसमें जिज्ञासा की जाँच–परख की वैज्ञानिक दृष्टि नहीं होती | और ऐसे मे मुक्तिबोध की साहित्यिक-सामाजिक दृष्टि का स्वाभाविक स्मरण हो आता है | मुक्तिबोध व्यक्तिवादी भावनात्मक स्थितियों को भी सामाजिक सुख-दुःख के साथ जोड़कर देखने की दृष्टि रखते हैं | मुक्तिबोध का आलोचक व्यक्तित्व तुलनात्मक एवं वैचारिक समानताओं की दृष्टि से नामवर सिंह से अपनी निकटता सिद्ध करता हुआ प्रतीत होता हैं | यह इस दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है कि नामवर सिंह काव्य प्रतिमानों का विवेचन मुक्तिबोध की काव्य क्षमताओ को एक मापदंड मानते हुए करते हैं | मुक्तिबोध ने अपने सम्पूर्ण साहित्यिक सृजनात्मक जीवन में समाज,राजनीति,राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सन्दर्भों को जांचने–परखने का कार्य अनवरत किया है | साहित्यिक जीवन को अपने जीवन का प्रमुख उद्देश्य बनाकर अत्यंत कठिनाइयों में मुक्तिबोध ने एक साहित्यिक के धर्म का निर्वाह किया | यह निर्वाह मुक्तिबोध के पूर्व निराला और मुंशी प्रेमचंद की परम्परा से जोड़कर देखा जा सकता है | मुक्तिबोध ने साहित्य को सामाजिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण माना है,बशर्ते कलाकार की कला में,उसकी ईमानदारी एवं साधना का समावेश हो |

साहित्यिक उद्देश्यों के लिए मुक्तिबोध साहित्य सृजन के साथ-साथ अपने समकालीन साहित्यकारों के साथ-साथ निरंतर मिलने-जुलने का क्रम बनाये रखते थे | यह प्रक्रिया अपने समकालीन साहित्यकारों के साथ विभिन्न साहित्यिक या सामाजिक विषयों पर नियमित रूप से विचारात्मक एवं आलोचनात्मक लेखों का प्रकाशन करवाया करते थे | अत्यंत आर्थिक परेशानी में रहते हुए भी मुक्तिबोध अपने अध्ययन के लिए पत्रिकाओं एवं पुस्तकों की व्यवस्था करने के प्रति सदैव सतर्क रहे | साहित्य के

* असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, गुरू घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

Scanned with CamScanner